कक्षा : चतुर्थ– जैनागम स्तोक वारिधि (परीक्षा 07 जनवरी, 2024)

उत्तरतालिका

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- 15x1=(15)

(i) यतना का भेद नहीं है-
(क) द्रव्य (ख) क्षेत्र
(ग) काल (घ) आलम्बन (घ)

(ii) एषणा समिति के भेद हैं-
(क) एक (ख) दो
(ग) तीन (घ) चार (ग)

(iii) वचन का दोष नहीं है-
(क) क्रोध (ख) मान
(ग) माया (घ) वात्सल्य (घ)

(iv) साधु के निमित्त वस्तु खरीदकर देवें, तो दोष लगता है-
(क) उद्देसिय (ख) ठवणा
(ग) कीय (घ) पामिच्चे (ग)

(v) आहार छोड़ने के कारण हैं-
(क) 10 (ख) 6
(ग) 8 (घ) 5 (ख)

(vi) केवलज्ञान की नियमा होती है-
(क) एकेन्द्रिय में (ख) बेइन्द्रिय में
(ग) पंचेन्द्रिय में (घ) अनिन्द्रिय में (घ)

(vii) भवसिद्धिया (भव्य) में ज्ञान की भजना होती है-
(क) 2 ज्ञान (ख) 4 ज्ञान
(ग) 5 ज्ञान (घ) 3 ज्ञान (ग)

(viii) अलेशी में ज्ञान की नियमा होती है-
(क) मतिज्ञान (ख) श्रुतज्ञान
(ग) अवधिज्ञान (घ) केवलज्ञान (घ)

(ix) समुच्चय ज्ञानी में भंग पाये जाते हैं-
(क) एक (ख) दो
(ग) तीन (घ) चार (ख)

(x) तिर्यंच की अपर्याप्त अवस्था में कौनसा ज्ञान नहीं होता है-
(क) मतिज्ञान (ख) मति अज्ञान
(ग) अवधि ज्ञान (घ) श्रुत ज्ञान (ग)

(xi) समुच्चय अपर्याप्त में गुणस्थान होते हैं-
(क) 14 (ख) 3
(ग) 2 (घ) 13 (ख)

(xii) देवाधिदेव की आगति हैं-
(क) 82 (ख) 275
(ग) 38 (घ) 111 (ग)

(xiii) भाव देव की उत्कृष्ट अवगाहना होती है-
(क) 500 धनुष की (ख) दो हाथ की
(ग) एक हाथ की (घ) 7 हाथ की (घ)

(xiv) छोटी गतागत में जीव के भेदों का विवेचन है-
(क) 111 (ख) 110
(ग) 563 (घ) 14 (क)

(xv) मनुष्य की आगति है-
(क) 96 (ख) 111
(ग) 41 (घ) 49 (क)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- 15x1 = (15)

(i) 'आलम्बन' ईर्या समिति का कारण है। (हाँ)

(ii) साधु पाँच कारणों से आहार छोड़ते हैं। (नहीं)

(iii) अंधा, लूला एवं लंगड़ा आदि से लेवें, तो दायक दोष लगता है। (हाँ)

(iv) शंकित आदि 10 दोष गृहस्थ एवं साधु दोनों को लगते हैं। (हाँ)

(v) मनु की अशुभ प्रवृत्ति को रोकना 'मनोगुप्ति' है। (नहीं)

(vi) पाँच अनुत्तर विमान में 3 ज्ञान की नियमा होती है। (हाँ)

(vii) पाँच स्थावर में 2 अज्ञान की नियमा होती है। (हाँ)

(viii) लब्धि के आठ भेद होते हैं। (नहीं)

(ix) अवधिज्ञानी का विषय अरूपी द्रव्य है। (नहीं)

(x) केवलज्ञान के दो भेद हैं। (हाँ)

(xi) नारकी के अपर्याप्त में सास्वादन समकित नहीं होती है। (हाँ)

(xii) तिर्यंच में 9 उपयोग होते हैं। (हाँ)

(xiii) देवाधिदेव वैक्रिय नहीं करते हैं। (हाँ)

(xiv) युगलिक जीवों के 5 भेद होते हैं। (हाँ)

(xv) तीन विकलेन्द्रिय की आगति और गति 49 की होती है। (हाँ)

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से सही जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्त स्थान में लिखिए:- 15x1 = (15)

(i)	चार भेद	(क) उपधि	यतना
(ii)	अतिशय	(ख) मिश्र वस्तु लेवे	34
(iii)	उद्गम के दोष	(ग) यतना	16
(iv)	अवधिज्ञान के भेद	(घ) वचनगुप्ति	6
(v)	औघिक	(च) 21	उपधि
(vi)	नरदेव की आगति	(छ) 16	82
(vii)	सत्यामृषा	(ज) 4 ज्ञान, 3 अज्ञान की भजना	वचनगुप्ति
(viii)	देवाधिदेव	(झ) 5 ज्ञान की भजना	अन्तर नहीं होता
(ix)	उम्मीसे	(य) 06	मिश्र वस्तु लेवे
(x)	द्वार	(र) कार्मण काय योग	21
(xi)	संज्ञी	(ल) 14वाँ गुणस्थान	4 ज्ञान, 3 अज्ञान की भजना
(xii)	अलेशी	(व) 34	14वाँ गुणस्थान
(xiii)	अकषायी	(क्ष) धर्मदेव	5 ज्ञान की भजना
(xiv)	अनाहारक अवस्था	(त्र) अन्तर नहीं होता	कार्मण काय योग
(xv)	अनगार	(ज्ञ) 82	धर्मदेव

प्र.4 मुझे पहचानो :- 15x1 = (15)

(i) मैं समिति का पाँचवाँ भेद हूँ। उच्चार प्रस्रवण-खेल-जल्ल-सिंघाण परिष्ठापनिका समिति

(ii) भिक्षा आदि लेने की सम्यक् प्रवृत्ति को कहते हैं। एषणा समिति

(iii) मैं ऐसा दोष हूँ जो 6 काय के आरंभ से बने हुए आहार ग्रहण करने से लगता है। आहाकम्म/ आधाकर्म

(iv) मेरा वर्णन उत्तराध्ययन सूत्र के 24वें अध्ययन में हैं। पाँच समिति तीन गुप्ति का थोकड़ा

(v) मैं मन की अशुभ प्रवृत्ति को रोकने से होती हूँ। मन गुप्ति

(vi) मेरा वर्णन भगवती सूत्र शतक 8 उद्देशक 2 में किया गया है। ज्ञान-लब्धि का थोकड़ा

(vii) हम वर्तमान में नरकादि गतियों में रहने वाले जीव हैं। भवत्थ/भवस्थ

(viii) मैं मनःपर्यवज्ञान का एक भेद हूँ। ऋजुमति/ विपुलमति

(ix) मुझे ज्ञान की स्थिति कहते हैं। काल

(x) मैं जीव का वह भेद हूँ, जिसमें अपर्याप्त एवं अनाहारक दोनों अवस्था मिलती है। बाटा बहती अवस्था

(xi) मैं एक ऐसी लेश्या हूँ जो आठवें से तेरहवें गुणस्थान तक अवश्य मिलती हूँ। शुक्ल लेश्या

(xii) मैं ऐसा देव हूँ, जिसकी आगति 275 की है। धर्मदेव

(xiii) मेरी अवगाहना जघन्य 1 हाथ की, उत्कृष्ट 7 हाथ की है। भाव देव

(xiv) मेरा जघन्य अन्तर पल्योपम पृथक्त्व का होता है। धर्मदेव

(xv) मेरी आगति 6 की तथा गति भी 6 की है। दूसरी नरक

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में दीजिए- 8x2 = (16)

(i) 'इंगाले दोष' का अर्थ लिखिए।

उ. भोजन में गृद्ध होकर उसके स्वाद की प्रशंसा करते हुए खाना 'इंगाले दोष' है।

(ii) मौखर्य में एकाग्रता का उदाहरण लिखिए।

उ. जैसे कोई बकवादी, दूसरों की निंदा करता ही रहे।

(iii) समुच्चय जीव में ज्ञान व अज्ञान की भजना लिखिए।

उ. समुच्चय जीव में 5 ज्ञान, 3 अज्ञान की भजना।

(iv) तिर्यंच पर्याप्त आहारक में तथा मनुष्य पर्याप्त आहारक में मिलने वाले योगों की संख्या लिखिए।

उ. तिर्यंच पर्याप्त आहारक में-12, मनुष्य पर्याप्त आहारक में-14

(v) नारकी पर्याप्त में गुणस्थान व योग लिखिए।

उ. गुणस्थान-4, योग-10

(vi) देवाधिदेव किसे कहते हैं ?

उ. 34 अतिशय, 35 वाणी के गुणों से युक्त, उत्पन्न ज्ञान-दर्शन के धारक, सर्वज्ञ, सर्वदर्शी, तीर्थंकर भगवान को देवाधिदेव कहते हैं।

(vii) भावदेव की पर्याप्त अवस्था में जघन्य एवं उत्कृष्ट अवगाहना लिखिए।

— जघन्य 1 हाथ, उत्कृष्ट 7 हाथ की।

(viii) छोटी गतागत का वर्णन किस सूत्र में किया गया है ?

उ. छोटी गतागत का वर्णन श्री पन्नवणा सूत्र के छठे पद में किया गया है।

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर दो-तीन पंक्तियों में लिखिए : - 8x3 = (24)

(i) आहार छोड़ने के कोई तीन कारण अर्थ सहित लिखिए।

उ. नोटः- इनमें से कोई तीन कारण मान्य-

1. शूलादि रोग उत्पन्न होने पर।
2. देवता, मनुष्य, तिर्यंच सम्बन्धी उपसर्ग होने पर
3. ब्रह्मचर्य की रक्षा के लिए।
4. प्राणियों की रक्षा के लिए।
5. तपस्या करने के लिए।
6. शरीर का त्याग करने के लिए।

(ii) सावद्य भाषा के कोई 6 भेद लिखिए।

उ. इनमें से कोई 6 मान्य- 1. कठोर, 2. कर्कश, 3. छेदक, 4. भेदक, 5. निश्चयात्मक, 6. सावद्य, 7. क्लेशोत्पादक, 8. मिश्र

(iii) मतिश्रुत अज्ञान में पाये जाने वाले भंग लिखिए।

1. अणाइया अपज्जवसिया 2. अणाइया सपज्जवसिया 3. साइया सपज्जवसिया

(iv) श्रुतज्ञान के 14 भेदों के नाम क्रम से लिखिए।

उ. 1. अक्षर श्रुत 2. अनक्षर श्रुत 3. संज्ञी श्रुत 4. असंज्ञी श्रुत 5. सम्यक् श्रुत
6. मिथ्याश्रुत 7. सादि श्रुत 8. अनादि श्रुत 9. सपर्यवसित श्रुत 10. अपर्यवसित श्रुत
11. गमिक श्रुत 12. अगमिक श्रुत 13. अंगप्रविष्ट श्रुत 14. अंग बाह्य श्रुत

(v) देव के अपर्याप्त में जीव के भेद, गुणस्थान, योग, उपयोग तथा लेश्याएँ कौन-कौनसी मिलती हैं ?

जीव के भेद- 2 (असन्नी पंचेन्द्रिय का अपर्याप्त, सन्नी का अपर्याप्त)।

गुणस्थान- 3 (पहला, दूसरा, चौथा)।

योग- 3 (वैक्रिय, वैक्रिय मिश्र और कार्मण काय योग)।

उपयोग- 9 (3 ज्ञान, 3 अज्ञान, 3 दर्शन)।

लेश्याएँ- छहों लेश्याएँ।

(vi) भव्य द्रव्य देव किसे कहते हैं ?

जो जीव अभी मनुष्य गति में अथवा तिर्यंच गति में है और भविष्य में देवगति में उत्पन्न होने वाले हैं, उनको भव्य द्रव्य देव कहते हैं।

(vii) साधुजी के 27 गुण लिखिए।

5 महाव्रत पाले, 5 इन्द्रियाँ जीते, 4 कषाय टाले, भाव सच्चे, करण सच्चे, जोग सच्चे, क्षमावन्त, वैराग्यवन्त, ज्ञान सम्पन्न, दर्शन सम्पन्न, चारित्र सम्पन्न, मन समाधारणया, वचन समाधारणया, काय समाधारणया, शीतादि परीषह सहन करने वाले, मारणान्तिक उपसर्ग सहने करने वाले।

(viii) नवग्रैवेयक की आगति और गति स्पष्ट कीजिए।

आगति 2 की- स्वलिंगी सम्यग्दृष्टि साधु और स्वलिंगी मिथ्यादृष्टि साधु।

गति 1 की- संख्यात वर्ष के कर्मभूमिज मनुष्य के पर्याप्त की।